॥ श्रीः ॥

चौ.सं.भ. ग्रन्थमाला

२४

महाकविकालिदासविरचितम्

अभिज्ञानशाकुन्तलम्

(गङ्गा संस्कृत-हिन्दी व्याख्या-टिप्पणी-परिशिष्ट
प्रस्तावनादिभिर्विभूषितम्)

व्याख्याकारः संपादकश्च

डॉ. गङ्गासागररायः

सर्वभारतीयकाशीराजन्यासस्थः

दुर्ग रामनगर, वाराणसी

चौखम्भा संस्कृत संस्थान

वाराणसी

भूमिका

कालिदास

कविकुलगुरु महाकवि कालिदास संस्कृत साहित्य के आकाश में जाज्वल्यमान भास्कर के समान हैं जिनकी द्युति के सामने सभी कवियों की कान्ति मलिन हो जाती है। ये भारतीय तथा पाश्चात्य दोनों दृष्टियों से संस्कृत साहित्य के निर्विवाद रूप में सबसे महान् कवि है। इनकी प्रतिभा तथा काव्य कौशल का अजस्र स्रोत संस्कृत साहित्य के विविध क्षेत्रों में प्रस्फुटित होता हुआ दिखलायी पड़ता है। नाटच-कला की सुन्दरता, काव्य की वर्णन छटा, गीति काव्य के सरस हृदयोद्गार आदि सभी क्षेत्रों में इनकी प्रतिभा सर्वातिशायिनी है। ये अपनी विद्वता, कविता एवं चमत्कारिक वाक् सिद्धि के द्वारा जन मानस को आलोकित करते हुए अद्यावधि शीर्ष-स्थानीय हैं। कालिदास ने अपनी रचनाओं के द्वारा देववाणी का शृङ्गार किया है। वे थोड़े शब्दों में जिन विराट् भावों की अभिव्यक्ति कर देते हैं दूसरा कवि विस्तार से लिख कर भी उतना नहीं कर पाता। परन्तु अत्यन्त दुर्भाग्य की वात है कि ऐसे महान् कवि की जितनी प्रशस्ति है उसका जीवनवृत्त उतना ही तिमिराच्छन्न है।

जन्मस्थान

महाकवि कालिदास के जन्मस्थान के सम्बन्ध में विद्वानों में मतैक्य नहीं है। उनकी जन्मभूमि के सम्बन्ध में बङ्गाल, काश्मीर, मिथिला, प्रयाग, उज्जयिनी आदि नामों का उल्लेख विद्वानों ने अपने मतानुसार किया है। कालिदास ने उज्जयिनी के प्रति अपना विशेष प्रेम प्रदर्शित किया है। 'मेघदूत' में उन्होंने अवन्ती प्रदेश की सूक्ष्म भौगोलिक स्थिति का वर्णन तथा वहां की छोटी-छोटी नदियों के नाम आदि का उल्लेख किया है। कालिदास ने मेघदूत (१।२९) में रास्ता टेढ़ा होने पर भी 'श्रीविशाला विशाला' (उज्जयिनी) को देखने के लिए मेघ से अनुरोध किया है। इस प्रकार उज्जयिनी के प्रति लगाव तथा वहाँ की सूक्ष्म भौगोलिक स्थितियों के ज्ञान के आधार पर कहा जा सकता है कि कविकुलशिरोमणि महाकवि कालिदास की जन्मभूमि उज्जयिनी ही रही अथवा वे इस प्रदेश में दीर्घकाल तक निवास किये।

पात्र-परिचय

पुरुष-पात्र

सूत्रधार—नाटक का आरम्भ करने वाला प्रधान नट।

दुष्यन्त—नाटक के नायक, हस्तिनापुर के राजा।

सूत—दुष्यन्त के सारथि।

वैखानस—कण्व का शिष्य, तपस्वी।

भद्रसेन—दुष्यन्त का सेनापति।

विदूषक (माधव्य)—दुष्यन्त का नर्मसचिव (अन्तरङ्ग मित्र)।

रैवतक (दौवारिक)—द्वारपाल।

करभक—राजा के पास राजामाता का सन्देश पहुँचाने वाला दूत।

कण्व (काश्यप)—आश्रम के कुलपति।

शार्ङ्गरव और शारद्वत—कण्व के शिष्य शकुन्तला का पालन करनेवाले पिता।

वैखानस, हारीत, गौतम और शिष्य—कण्व के शिष्य, तपस्वी।

कञ्चुकी (पार्वतायन)—रनिवास की देख-भाल करने वाला एक वृद्ध ब्राह्मण।

वैतालिक—स्तुति-पाठ करने वाले (चारण, भाट)।

नागरकश्याल—नगर-रक्षाधिकारी, राजा का साला।

धीवर—मछली पकड़ने वाला (मछुवा)।

सूचक और जालुक—पुलिस के सिपाही।

मातलि—इन्द्र के सारथि।

बालक (सर्वदमन) भरत—दुष्यन्त का पुत्र।

मारीच—महर्षि कश्यप प्रजापति।

गालव—मारीच के शिष्य।

सोमरात—दुष्यन्त के पुरोहित।

स्त्री-पात्र

नटी—सूत्रधार की पत्नी।

शकुन्तला—नाटक की नायिका, दुष्यन्त की धर्मपत्नी, कण्व की पोष्य-पुत्री।

अनसूया और प्रियंवदा—शकुन्तला की सखियाँ।

गौतमी—कण्व के आश्रम में रहने वाली वृद्धा तापसी, कण्व की धर्म-भगिनी।

प्रतीहारी (वेत्रवती)—द्वारपालिका (दुष्यन्त की परिचारिका)।

मिश्रकेशी—एक अप्सरा, मेनका की सखी।

परभृतिका और मधुकरिका—उद्यान-पालिकाएँ (प्रमदवन में चित्र बनाने के लिए बाहर से बुलाई गई दासियाँ)।

चतुरिका (चेटी)—राजा की सेविका।

तापसी—मारीच के आश्रम की तपस्विनी (सर्वदमन की रक्षिकाएं)।

अदिति (दाक्षायणी)—मारीच (कश्यप) की पत्नी।

अन्य संकेतित-पात्र

(नाटक में इन पात्रों का केवल नामोल्लेख हुआ है)

मघवा (इन्द्र)—देवताओं के राजा एवं दुष्यन्त के मित्र।

जयन्त—इन्द्र का पुत्र।

इन्द्राणी—इन्द्र की पत्नी।

कौशिक (विश्वामित्र)—शकुन्तला के जनक (पिता)।

दुर्वासा—ऋषि।

मेनका—शकुन्तला की जननी।